

नो घोरम् des Indra 20, 6. स्थिरं मनश्चक्षुषे 5, 30, 4. पुत्रा चिद्धि ते मनः 8, 1, 7. सोमकामं हि ते मनः 8, 50, 2. मनो दानाय चोदयन् 88, 4. या ते वत्सो मनो यमत् 11, 7. मनो भिया मे वेपते 5, 36, 3. यो वा कृविष्मन्मनसा ददर्श herzlich 1, 137, 6. उद्वर्ष्य सत्त्वानां मनसि 10, 103, 10. मनसा मोदमानः innerlich mich freuend VS. 3, 41. 4, 17. मनसा प्रीतः Ait. Br. 7, 16. धमुराणो मनसि समगृह्णन् Kāth. 12, 2. TS. 2, 3, 2. यथा यथा मनस्तस्य दुष्कृते कर्म गच्छति । तथा तथा शरीरं तत्तेनाधर्मेण मुच्यते ॥ das Herz, Gewissen Spr. 4789. यस्मिन्कर्मण्यस्य कृते मनसः स्याद्लाघवम् das Herz keine Erleichterung fühlt M. 11, 233. शरीरमन्मथचोदिते । अतिविद्धेन मनसा MBh. 3, 1819. विलासवत्यो मनसि प्रसङ्गिनाम् । घनङ्गदीपनमाप् कुर्वते R. 1, 12. मनःप्रङ्गारसंकल्पात्मानो योनिः (कामस्य) H. 229. प्रहृष्टेन मनसा MBh. 3, 2602. 2710. R. 1, 64, 9. प्रहृष्ट° adj. Hit. 16, 11. प्रीत° adj. R. 1, 1, 65. 4, 15. शङ्कित° adj. Pāṇāt. 104, 16. स्थिर° adj. 107, 11. उत्सिक्त° adj. M. 8, 71. विषयासक्त° adj. Çuk. in LA. (II) 32, 11. यक्रारणद्वेषि मनो ऽस्ति यस्य Spr. 1887. सध्यास्तव मयि मनः संभतस्तेरुम् Megh. 92. यत्र वास्य रमेन्मनः M. 2, 223. Spr. 2972. मनस्तेषु प्रवर्तताम् MBh. 3, 2165. मरुतां मनो नातिविशद्यास Ragh. 12, 101. न मे सीदति मज्जनो न ममेदिपते मनः MBh. 3, 2779. ममापि व्यथते मनः 3, 2675. व्यदीर्यत मनो दुःखात् 2773. मनसश्च महात्वरः Vid. 52. बाले ऽस्मिन्नैरास इव पुत्रे स्त्रियति मे मनः Çāk. 102, 7. 13, 11. 34. यदार्थमस्यामभिलापि मे मनः Spr. 273. मनो हि मम तां गतम् MBh. 3, 2241. तस्यां तस्य सुत्रपायां तरुण्यो च मनो ययौ Kathās. 32, 148. कामानामपि दातारं कर्तारं मनसा प्रियम् MBh. 13, 2228. मनः प्रह्लादयत्तोभिः (स्त्रीभिः) Spr. 2102. सर्वस्य लोकस्य मन आदे (मनो ऽग्रहीत् v. l.) Ragh. 4, 8. ममापि कर्ते मनः R. 3, 38, 18. MBh. 13, 1398 (wo दृष्टेय zu lesen ist). Spr. 931. चेताबुद्धिमनोहरीः MBh. 3, 1787. विवेश प्रत्येकं सतां मनः Ragh. 12, 9. Fünf Sinne mit मनस् als sechstem AV. 19, 9, 5. als fünfter neben den प्राणाः Çat. Br. 8, 4, 3. 5. 7, 5, 3. 6. उद्वर्कत्मानश्चैव मनः सदसदात्मकम् । मनसश्चाप्यर्ककारमभिमत्तारमीधरम् ॥ M. 1, 14. 2, 92. शरीरं चैव वाचं च बुद्धीन्द्रियमनसि च । नियम्य 192. 12, 4. इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः । मनसश्च परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान्तरः ॥ Kathop. 3, 10. इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः Buag. 3, 40. 42. आत्मा बुद्ध्या समर्थार्थान्मनो पुङ्के चित्तया । मनो कायाग्निमाहृति स प्रेरयति माहृतम् ॥ Çakṣuṣā 2, 8 in Ind. St. 4, 106. Gespräch mit den fünf Sinnen MBh. 14, 668. fgg. कुरु तनुबुद्धिमनस्सु वितृष्णाम् Spr. 4732. Burn. Intr. 231. 301. 633. अथ सृष्टो मनश्चक्रे ब्रह्माहकारमूर्तिभूत् । मनसश्चन्द्रमाज्ञे Sūrjas. 12, 22. हृदयं निर्भिद्यत हृदयान्मनो मनसश्चन्द्रमाः Ait. Up. 1, 4. मनसीन्द्रं निवेशयेत् M. 12, 121. Buāg. P. 2, 1, 34; vgl. Werner, Rāmāt. Up. 287 und मनसिज 2. Gern verbunden mit हृद् (हृदय) Herz und Sinn: (स्तोमः) हृदा तृष्टा मनसा RV. 1, 171, 2. उत हृदेत मनसा जुषाणः 7, 98, 2. हृदे मनसे जुष्टाः 4, 37, 2. 38, 6. इच्छामीहृदा मनसा चिदिन्द्रम् 6, 28, 5. मनो हृदयं च 10, 10, 13. Çat. Br. 8, 3, 3. Çāṅkṣ. Çr. 4, 20, 1. ह्लादयत्सर्वगात्राणि मनसि हृदयानि च R. 1, 4, 30. तपत्यादित्यवज्ञेय (राज्ञा) चक्षूषि च मनसि च Augen und Herzen M. 7, 6. जङ्गार सर्वभूतानां चक्षूषि च मनसि च MBh. 1, 7695. मुल्लसी प्रभया राज्ञां चक्षूषि च मनसि च 3, 2198. मनोऽनयनन्दन 9920. das geistige Vermögen, das mit dem Tode aus dem Körper entflieht: Geist, Seele (das Thier hat nicht मनस्, sondern अमु Ait. Br. 2, 6). RV. 10, 37, 3. आ तं एतु मनः पुनः क्रवे दत्ताय जीवसे 4. 89, 3. VS. 4, 15. पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा मुह AV.

1, 1, 2. TS. 6, 6, 2. 2. मनस्, शरीर Ait. Br. 3, 8. Çat. Br. 14, 6, 2, 13. मनस्तनुषु विधत्तः VS. 3, 56. गर्तमनस् TS. 6, 6, 2. 2. Âçv. Gṛh. 3, 6, 8. एषा मनो मे प्रसभं शरीरात् — कर्षति Vikr. 19. Es lassen sich folgende Modificationen der Bedeutung unterscheiden, wobei aber zu bemerken ist, dass die psychologische Bestimmtheit der zur Erklärung zu Hilfenommenen Begriffe dem Worte ebenso fehlt, wie dem deutschen Sinn, und dass dieses letztere in der Regel ausreicht: a) das Denken, Vorstellen; Verstand, Geist: तं ते बुद्धिमि मनसा in Gedanken (nicht in Wirklichkeit) RV. 10, 17, 12. आत्मानं ते मनसारदज्ञानाम् 4, 163, 6. TS. 2, 5, 11. 5. गापत्रं गापेत् Lāt. 1, 8, 14. Kāt. Ça. 6, 1, 36. 12, 4, 16. मनसानिष्टचित्तनम् M. 12, 5. तानेव शरणं देवान् जगमनुर्मनसा तदा MBh. 3, 2224. R. 1, 2, 2. 2, 8, 3. द्वारकामेति Vop. 3, 19. न चैनमभ्यभाषत मनोभिस्त्वभ्यपूजयन् MBh. 3, 2150. न मनसा मत्तवा उ es ist nicht einmal daran zu denken RV. 7, 4, 8. (गिरिम्) अगम्यं मनसापि MBh. 1, 1106. 7022. Ragh. 2, 27. Kumāras. 3, 51. Hit. 48, 22. तस्मादस्य वधं राजा मनसापि न चित्तयेत् M. 8, 381. 4, 109. MBh. 3, 2399. Spr. 2105. मनसा ज्वीयान् schneller als der Gedanke RV. 1, 183, 1. 9, 97, 28. 10, 39, 12. मनो ज्विष्ठं पतयत्स्वत्तः 6, 9, 5. 1, 71, 9. VS. 9, 7. AV. 1, 11, 6. TS. 7, 3, 4. 4. मनश्चिन्मे हृद् आ प्रत्यवाचत् mein Verstand sagte meinem Herzen RV. 8, 89, 5. अग्निं क्रत्वा मनसा दीध्यानाः 4, 33, 9. 36, 2. 5, 81, 1. मनसा ध्यायेत् Çat. Br. 3, 9, 4. 17. 12, 9, 13. Âçv. Gṛh. 2, 3, 6. एवं संचित्य मनसा M. 11, 231. मनसा समचित्तयत् MBh. 3, 2878. इति निश्चित्य मनसा 2779. R. 1, 37, 9. विगणयन्ना मनसा MBh. 3, 2877. कार्यं प्रतिपेदे तन्मनसा 5, 6044. R. 4, 28, 15. येन तमसा प्रावृता मन्येत तन्मनसा गच्छेत् das stelle er sich vor Ait. Br. 3, 19. यदि त्वमत्र मनसा जगन्म्य VS. 23, 49. यन्मनसा पतयति TS. 6, 1, 3. 3. मनस्, चतुस् RV. 3, 37, 2. 10, 130, 6. VS. 18, 58. मनस्, वाच् (वचस्) 6, 15. 11, 66. Ait. Br. 2, 5, 3. 23. Çat. Br. 1, 4, 4. 1. fgg. MBh. 3, 2206. 2208. यस्य वाच्यनसी शुद्धे सन्प्यगुप्ते च सर्वदा M. 2, 160. यत्पुरुषो मनसाभिगच्छति तद्वाचा वर्दति TS. 5, 1, 3. 3. मनसा चित्तितं कर्म वचसा न प्रकाशयेत् Spr. 2103. मनस्, वाच् (वचस्, वचन). कर्मन् M. 2, 236. Spr. 2104. 2107. 2443. मनस्, वाच् (वचस्), देह (काय, मूर्ति) M. 1, 104. 3, 165. fg. 9, 29. 12. 3. 8. Spr. 2106. Madhus. in Ind. St. 1, 23, 10. M. 11, 231. 241. मनसि कर (vgl. मनसिकार) P. 1, 4, 73. Vop. 13, 5. Ait. Br. 7, 2. Daç. 2. 8. Lot. de la b. l. 413. तत्संदेशान्मनसि निक्षिप्तात् so v. a. dem Geiste eingepägt Megh. 97. इदं तु मे मनसि वर्तते Çāk. 23, 22. 33, 12. Pāṇāt. 1, 7, 7. मनः कर, प्रकार, मनो धा, विधा, धर, निवेशण, बन्धु seine Gedanken auf Etwas oder Jmd richten, denken an: नार्थमे कुरुते मनः M. 12, 118. MBh. 3, 15799. पापे R. 2, 34, 29. शेके MBh. 3, 2630. R. Gorr. 2, 19, 21. विपादे Spr. 1472. कल्याणे 2320. प्रीति 3392. अभावे 4662. आहारे वा विकारे वा R. 2, 41, 13. Spr. 2369. R. Gorr. 2, 8, 23. स च नास्मासु कृतवान्मनो वीर कथं च न MBh. 1, 7859. mit dat.: वधाप्य देवशत्रूणाम् R. 1, 14, 34. mit प्रति Hariv. 4078. तदा वै विपरीतेषु मनः प्रकुरुते नरः R. 3, 62, 21. धर्मे R. ed. Bomb. 6, 6, 9. तस्य विनाशाय M. 7, 12. इत्येव च मनो दधे MBh. 3, 5949. धर्मे M. 12, 23. निवेशाय MBh. 3, 2535. गमनाय R. Gorr. 1, 9, 32. पुद्गाय 4, 10, 15. यष्टुम् 1, 11, 1. 2, 33, 49. त्यक्तुं शरीरं व्यधित स्वयं मनः Verz. d. Oxf. H. 287, a, 1. मनो दधे राजसूयाय MBh. 2, 541. मन्दरं पर्वतं गतुम् Hariv. 8261. 14812. इन्द्रियाणि तु संकृत्य मन आत्मानि धारयेत् MBh. 14, 548. Buāg. P. 2, 1, 18. न सीदन्नपि धर्मेण मनो ऽधर्मे नि-